

सुमिरौ श्री रघुवीर धीर रघुवंस विभूषन । सरन गहे सुख रासि हरत अघसागर दूषन ॥१॥
सुन्दर राम उदार बान कर सारंगधारी । हिय धरि प्रभु को ध्यान विदुष जन आनंदकारी ॥२॥
अवधपुरी निज धाम परम अति सुन्दर राजै । हाटक मनिमय सदन नगन की कान्ति विराजै ॥३॥
पौरि द्वार अति चारु सुहावन चित्रित सोहै । चंपतार-मन्दार-कल्पतरु देखत मोहै ॥ ४ ॥
भवन भवन चित्राम चित्र की रम्भा सोहैं । वनज सुतन की पाँति कान्ति गोखन मग जोहैं ॥५॥
तोरण केतु पताक ध्वजा तहँ विमल सुहाई । मनु रघुवर हित करन आय त्रिभुवन छवि छाई ॥६॥
बीथी बगर बजार रतन तँचि जोति उजासा । रहन न पावै तिमिर सहज ही होत प्रकासा ॥७॥
देखि पुरी छवि भरा मध्य के अँटकत रथ रवि । हरषहिं वरषहिं सुमन विबुध जन निरखि पुरी छवि ॥८॥
श्री रघुवर जस भरी पुरीवर वर की दायन । धर्मसील नर नारि सबै प्रभु सुजस परायन ॥९॥
गावत रघुवर चरित मिलत जित तित ते भामिनि । स्वर अस कोकिल नाद रूप जनु दमकत दामिनि ॥१०॥
तिन जुवतिन को भाग बरनि का पै कहि आवै । सचि सारद नगमुता देखि कै मन ललचावै ॥११॥

अवध पुरिन की अवधि यही श्रुतिसंमृति वरनी । ध्यान धरे सुख करनि नाम उचरत अघ हरनी ॥
करि करि बहुत कलेस कहत उपमा जो गुणि जन । अन्य उक्ति सब अल्प अवधि सम अवधि भले वन ॥१३॥
बापी कूप तडाग रतन सोपान बनाये । रहे अमल जल पूरि विकसि कल्हार जु छाये ॥१४॥
सीतल तरु की छाँह बिहँग कूजत मन भाये । चहँ ओर आराम लगत उपवन जु सुहाये ॥१५॥
तिन पर केकि कपोत कीर कोकिल किलकारत । सुर धरि तिनकी देह मनो प्रभु सुजस उचारत ॥१६॥
झूमि रहे लगि भार डार फल फूलन भारी । पथिक जनन फल दैन मनहुँ तिन भुजा पसारी ॥१७॥
निकटहि सरजू सरित धरे अस उज्जल धारा । भवसागर को तरन विदित यह पोत उदारा ॥१८॥
हरन पाप त्रय ताप जनन चितत फल देनी । सुकृती जन आरोह सुदृढ़ बैकुण्ठ निसेनी ॥१९॥
तीर नरन की भीर लगत अस परम सुहाये । मनहुँ व्योम को त्यागि अमरगन सेवन आये ॥२०॥
करैं जो मज्जन पान धन्य बड़ भाग जनन के । विविध भाँति के घाट तहाँ मन थकित मुनिन के ॥२१॥
नीर परम गंभीर चलत गहिरे सुर गाजै । तहाँ तीर बहु सघन कमल अति सुन्दर राजै ॥२२॥
कमल कमल के मध्य जूथ मिलि भँवर गुँजारै । मानहुँ मुनि जन वृन्द वेद धुनि शब्द उचारै ॥२३॥

त्रिविध वयारि विहार बहत निसि दिन अघहारी । सीतल मंद सुगंध परम अति आनंदकारी ॥२४॥
बोलत चकवा कुंड तीर मन मोद बढ़ावैं । मानहुँ परम सुदेश निकर मिलि गंध्रव गावैं ॥२५॥
कानन तहाँ अशोक* शोक तेहि देखत भाजै । विविध भाँति के वृक्ष सबै वृन्दारक* राजै ॥२६॥
साखा पत्र अनूप कहा कहीं सोभा उन की । फल कुसुमन के झुंड निरखि सुधि रहत न तन की ॥२७॥
कल्पवृक्ष के निकट तहाँ यक धाम मनिन जुत । कंचनमय सब भूमि परम अति राजत अद्भुत ॥२८॥
स्वर्ण वेदिका मध्य तहाँ एक रतन सिंहासन । सिंहासन के मध्य परम अति पदुम सुभासन ॥२९॥
ताके मध्य सुदेस कर्णिका सुन्दर राजै । अति अद्भुत तहँ तेज वह्नि सम उपमा भ्राजै ॥३०॥
ता मधि सोभित राम नील इन्दीवर ओभा । अखिल रूप अंभोधि सजल घन तन की सोभा ॥३१॥
सिर पर दिव्य किरीट जटित मंजुल मनि मोती । निरखि रुचिरता लजित निकर दिनकर की जोती ॥३२॥
कुंडल ललित कपोल जुगल अति परम सुदेसा । तिन को निरखि प्रकास लजित राकेस दिनेसा ॥३३॥
मेचक कुटिल सुचारु सरोरुह नयन सुहाये । मुख पंकज के निकट मनहुँ अलि छौना आये ॥३४॥

भृकुटी त्रयपद दुगुन मनहु अलि अवलि विराजै । नासा परम सुदेस वदन लखि पङ्कज लाजै ॥३५॥
चितवनि चारु कृपाल रसिक जन मन आकर्षत । मंद हास मृदु वचन जनन को आनंद वरषत ॥३६॥
दीरघ दीप्त ललाट ज्ञान मुद्रा दृढ धारी । सुन्दर तिलक उदार अधिक छवि सीमित भारी ॥३७॥
परम ललित मनिमाल हार मुक्ता छवि राजै । उर श्रीवत्स सुचिह्न कंठ कौस्तुभ मनि भ्राजै ॥३८॥
जग्योपवीत सुदेश मध्य धारा जु विराजै । उभै भुजा आजानु नगन जटि कंकन राजै ॥ ३९ ॥
चूनी रतन जराय मुद्रिका अधिक सँवारी । सोभित अद्भुत रूप अरुन की छवि अनुहारी ॥४०॥
भूषन विविध सुदेस पीतपट सोभित भारी । लसत कोर चहुँ ओर छोर कल कंचनधारी ॥४१॥
रोमावलि बनि आइ नाभि अस लगति सुहाई । त्रिवली तामधि ललित रेख त्रय अति छवि छाई ॥४२॥
कटि परदेस सुठार अधिक छवि किंकिनि राजै । जानु पुष्ट बनि गूढ़ गुल्फ अति ललित विराजै ॥४३॥
नूपुर पुरट सुचारु रचित मनि मानिक सोहैं । रव कल सुर संगीत सुनत परिजन मन मोहै ॥४४॥
जुगल अरुन पद पद्म चिह्न कुलिसादिक मंडित । पद्मा नित्य निकेत शरणगत भव भय खंडित ॥४५॥

दक्षिण भुज सर सुभग सुहावन सुन्दर राजें ।
दिव्यायुध सु विसाल वाम कर धनुष विराजें ॥४६॥

षोडस वरस किशोर राम नित सुन्दर राजें ।
राम रूप को निरखि विभाकर कोटिक लाजें ॥४७॥

अस राजत रघुवीर धीर आसन सुखकारी ।
रूप सच्चिदानन्द वाम दिसि जनक कुमारी ॥४८॥

नगन जरे छबि भरे विविध भूषन अस सोहैं ।
सुन्दर अंग उदार विदित चामीकर को हैं ॥४९॥

अलक झलकता स्याम पीठ सोभित कल वेनी ।
सुन्दरता की सींव किधौं राजति अरु श्रेनी ॥५०॥

रचित सुविविध प्रकार मांग जरतार सँवारी ।
मनहुँ सुरसरी धार बनी सोभा अस भारी ॥५१॥

पाटन की लर और बड़े-बड़े उज्जल मोती ।
सघन तिमिर के मध्य मनो उडगन की जोती ॥५२॥

रतन रचित मनि जटित सीस पर विंदा छाजे ।
ललित कपोल सुजुगल करन ताटक विराजें ॥५३॥

उज्जल भाल सुचारु अमित उपमा अस सोहैं ।
राजत परम सुहाग भाग को भवन किधौं है ॥५४॥

गोरोचन को तिलक ललित रेखा बनि आई ।
उन्नत नासा सुभग लसत वेसरि जु सुहाई ॥५५॥

भृकुटी नयन विसाल सौम चितवनि जग पावन । मानहुँ विकसित कमल वदन अस लगत सुहावन ॥५६॥
अरुन अधर तर दसन पाँति अस लगति सुहाई । चारु चिबुक बिच तनक बिन्दु मेचक छवि छाई ॥५७॥
कंठपोति मनिजोति सुछवि मुक्ता वर माला । पदिक रचित कलधौत विराजत हृदय विसाला ॥५८॥
हेम तंतु कर रचित अरुन सारी रँग झीनी । कंचुकि चित्रित चतुर विविध सोभित रँग भीनी ॥५९॥
वर अंगद छवि देत बाँहु अस लगति सुहाई । करन चुरी रंगभरी ललित सुँदरी बनि आई ॥६०॥
पद्मराग मणि नील जटित युग कंकण राजै । मनहु वनज के फूल दुरेफन पंक्ति विराजै ॥६१॥
लहंगा कटि परदेस भाँति अति सोभित गहिरी । अरुन असित सित पीत मध्य नाना रँग लहरी ॥६२॥
हरित नगन कर जरित युगल जेहरि अस राजै । तिन पर घुँघरू और अग्र विछिया सु विराजै ॥६३॥
तिन पर नग जु अमोल ललित चूनी गन लाये । चरन तारु तल अरुन सहज ही लगत सुहाये ॥ ६४ ॥
अतुलित युगल स्वरूप कवन अस उपमा तिनकी । जेतिक उपमा दीसि शक्ति करि भासित तिनकी ॥६५॥
यहि विधि राजत राम अवधपुर अवध बिहारी । दंपति परम उदार सुजस सेवक सुखकारी ॥६६॥

दक्षिण भुज रिपुदलन गौर तन तेज उदारा । उभय हेतु अनुसार धरे वृत खंडित धारा ॥६७॥
शेष लिये कर छत्र भरत लिये चौर दुरावैं । अनिल सुवन कर जोरि सुप्रभु की कीरति गावैं ॥६८॥
अपनी अपनी ठौर नित्य परिकर बनि भारी । सुरति शक्ति विमलादि रहत नित आज्ञाकारी ॥६९॥
जो जो जेहि अधिकार सचिव सेवा मन वासै । बीनाधर सुर तान गान करि प्रभुहि उपासै ॥ ७० ॥
यही ध्यान उर धरै स्वयं तन सुफल करेवा । भव चतुरानन आदि चरन बंदै सब देवा ॥७१॥
यह दम्पति वर ध्यान रसिक जन नित प्रति ध्यावै । रसिक बिना यह ध्यान और सपनेहु नहिं पावै ॥७२॥
अमल अमृत रस धार रसिक जन यहि रस पागै । तिहि को नीरस ज्ञान जोग तप छोई लागै ॥७३॥
परम सार यह चरित सुनत श्रवणन अघ हारी । ध्यान परम कल्याण सन्त जन आनंदकारी ॥७४॥
तिन्हैं भूलि जन कहौ कुटिलता पंक मलिन मन । यह उज्जल मनि माल पहिरिहैं परम रसिक जन ॥७५॥
जगत ईश को रूप वरनि कहि कवन अधिक मति । कहा अल्प खद्योत भानु के निकट करै दुति ॥७६॥
कहैं चातक की शक्ति अखिल जल चोंच समावै । कछुक बुन्द मुख परै ताहि लै आनन्द पावै ॥७७॥

सुनि आगम विधि अर्थ कछुक जो मनहि सुहायो ।
यह मंगलकर ध्यान जथा मति वरनि सुनायो ॥७८॥

श्री गुरु सन्त अनुग्रह ते अस गोपुर वासी ।
रसिक जनन हित करन रहसि यह ताहि प्रकासी ॥७९॥

ध्यानमंजरी नाम सुनत मन मोद बढ़ावे ।
श्री रघुवर को दास मुदित मन अग्र सो गावै ॥८०॥

इति श्रीस्वामीरामानन्दश्रीअनन्तानन्दपदाश्रित—
पयोहारी श्रीकृष्णदासचरणानुग
श्री अग्रदासविरचिता
श्री सीताराम ध्यानमंजरी संपूर्णा
॥ श्री सीतारामार्पणमस्तु श्रीः ॥